अज़ान और नमाज़ क्या है ?

नसीम ग़ाज़ी

अज़ान और नमाज़ क्या है?

लेखक
नसीम ग़ाज़ी

मधुर सन्देश संगम
E20, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

संदेश सीरीज़

AZAN AUR NAMAZ KAYA HAI? (HINDI)

प्रकाशक : मधुर संदेश संगम

E-20, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
फ़ोन : 6925156 फ़ैक्स : 3276741

मिलने का अन्य पता :

मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स

D-307, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
दूरभाष : 6911652, 6317858

संस्करण : 2002 ई०

मूल्य : **5.00**

कम्पोज़िंग : नाज़ इन्टरप्राइज़ेज़, दिल्ली-32

मुद्रक : दावत आफ़सैट दिल्ली

'कृपाशील दयावान ईश्वर के नाम से'

दो शब्द

अज़ान और नमाज़ के संबंध में अनभिज्ञता के कारण बड़ी भ्रान्तियाँ पाई जाती हैं। यह बात उस समय और अधिक दुखद हो जाती है जब बिना सही जानकारी के इस्लाम की इस पवित्र एवं कल्याणकारी उपासना के संबंध में निसंकोच अनुचित टीका-टिप्पणी तक कर दी जाती है और उसके बारे में सही जानकारी प्राप्त करने का कष्ट तक नहीं किया जाता। इस नीति को अपनानेवाले समाज के अनेक वर्गों के लोग हैं। शिक्षित लोग भी हैं और जन-सामान्य भी। बहुत से लोग अज्ञानतावश यह समझते हैं कि अज़ान में अकबर बादशाह को पुकारा जाता है। कबीरदास जैसे महापुरुष तक ने भी अपनी अनभिज्ञता के कारण अज़ान के संबंध में कह डाला :

कंकर पत्थर जोर के मस्जिद लिया बनाय।
तापे मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ ख़ुदाय॥

आज बहुत-सी समस्याओं का मूल कारण एक-दूसरे के बारे में सही जानकारी का न होना है। यह अत्यन्त दुखद स्थिति है कि जानकारी हासिल करने के इतने अधिक संसाधन उपलब्ध होते हुए भी हम सभ्य एवं शिक्षित कहे जानेवाले लोग परस्पर एक-दूसरे के संबंध में अंधकार में रहते हैं। अनभिज्ञता और द्वेष के कारण ऐसा भी होता है कि मनुष्य ऐसी बात का दुश्मन हो जाता है जो वास्तव में उसके कल्याण की है। ऐसा ही कुछ इस्लाम और उसकी शिक्षाओं के साथ हुआ है और निरन्तर हो रहा है।

इस पुस्तिका में नमाज़ का महत्व और अज़ान तथा नमाज़ का मूल अर्थ बताया गया है । ताकि इनका सही स्वरूप जनसामान्य के सामने आ सके और इनके संबंध में भ्रान्तियाँ दूर हो सकें ।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि नमाज़ में आप अपने दिलों की शान्ति और नेत्रों की ठंढक पाएँगे ।

—नसीम ग़ाज़ी

नमाज़ का महत्व

हमें और सम्पूर्ण जगत को सर्वशक्तिमान ईश्वर ने पैदा किया है। जीवन-यापन के लिए हमें जितनी चीज़ों की आवश्यकता है उन सभी को उसी ने जुटाया है। जीवन और मृत्यु उसी के हाथ में हैं। वही पालनहार है। जीविका उसी के दिए मिलती है। विनती और प्रार्थनाओं का सुननेवाला और मुसीबत में मदद करनेवाला वही है। वास्तव में उसके सिवा कोई हमें लाभ या हानि पहुँचाने की शक्ति नहीं रखता। दुनिया में जो कुछ है उसका वास्तविक स्वामी ईश्वर ही है। वास्तविक शासक भी वही है। दुनिया का यह कारख़ाना उसी के चलाए चल रहा है। उस सर्वशक्तिमान ईश्वर का कोई साझीदार नहीं, न उसके अस्तित्व में, न उसके गुणों में और न उसके अधिकारों में। मृत्यु के पश्चात हमारे जीवन का हिसाब भी वही लेगा और कर्म के अनुसार बदला देगा। हम मनुष्यों के मार्गदर्शन और पथप्रदर्शन के लिए ईश्वर ने अपने सन्देष्टा और पैग़म्बर भेजे। इन पैग़म्बरों ने ईश्वर के आदेशानुसार मानवों को जीवन-यापन का ढंग बताया। इन सभी पैग़म्बरों की शिक्षा एक ही थी, अर्थात ईश्वर का आज्ञापालन और समर्पण। हमारे पालनहार प्रभु ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अपना अन्तिम सन्देष्टा बनाकर भेजा और उनके द्वारा क़ुरआन रूपी ग्रंथ प्रदान करके हमारे पूर्ण मार्गदर्शन और पथ-प्रदर्शन की व्यवस्था की। इसी मार्गदर्शन का नाम इस्लाम है। 'इस्लाम' नाम किसी व्यक्ति विशेष, किसी देश या किसी अन्य वस्तु के नाम पर नहीं, बल्कि विशेष गुणों के कारण रखा गया है। इस्लाम का शाब्दिक अर्थ होता है आज्ञापालन और समर्पण। इस्लाम वास्तव में नाम है स्वयं को ईश्वर के प्रति समर्पित होने और उसके आदेशों का स्वेच्छापूर्वक पालन का। इस्लाम की मूल शिक्षा यह है कि बन्दगी और आज्ञापालन केवल ईश्वर ही का किया जाए। ईश्वर ही को अपना उपास्य

बनाया जाए, उसी की पूजा और उपासना की जाए। किसी अन्य के आगे अपना सिर न झुकाया जाए और सम्पूर्ण जीवन प्रेमपूर्वक ईश्वर की दासता और उसके आज्ञापालन में व्यतीत हो।

इन बातों को सदैव याद रखने, ईश्वर की दासता का कर्तव्य निभाने, उसके उपकारों पर आभार व्यक्त करने, ईश्वर के समक्ष अपनी दासता का प्रदर्शन करने तथा ईश्वर की महानता और सत्ता को स्वीकार करने की अभिव्यक्ति के लिए 'इस्लाम' ने जो उपासना-पद्धति निर्धारित की है उसमें सबसे महत्वपूर्ण उपासना नमाज़ है। नमाज़ का महत्व और उसकी आवश्यकता का उल्लेख ईश्वरीय ग्रन्थ क़ुरआन में और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के वचनों में बहुत ज़्यादा हुआ है। दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़नी इस्लाम के प्रत्येक अनुयायी (स्त्री और पुरुष) के लिए अनिवार्य है। इस्लाम के किसी अनुयायी के लिए नमाज़ का छोड़ना अधर्म ठहराया गया है। सच्ची बात तो यह है कि नमाज़ के बिना इस्लाम का अनुयायी होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

नमाज़ अगर सोच-समझकर और पूरे होश के साथ पढ़ी जाए तो वह न केवल यह कि मनुष्य के आध्यात्मिक जीवन को विकसित करती है, उसे ईश्वर का सामीप्य प्रदान करती और उसका प्रिय उपासक बनाती है, बल्कि यह नमाज़ मनुष्य के सांसारिक जीवन को बुराइयों और दुर्गुणों से मुक्त करने और उसे एक उत्तरदायी और सज्जन पुरुष बनाने की भी अपने अन्दर शक्ति रखती है। सच तो यह है कि नमाज़ मानव को इस योग्य बना देती है कि वह अपना पूरा जीवन अपने स्रष्टा और पालनहार ईश्वर के आदेशों और निर्देशों के अनुसार सहज रूप से व्यतीत कर सके। यह तथ्य नमाज़ के पूरे स्वरूप से अभिलक्षित होता है। क़ुरआन में नमाज़ का उद्देश्य बताते हुए ईश्वर ने कहा है:

"निस्सन्देह नमाज़ अश्लील कर्मों और बुरी बातों से रोक देती है।" (क़ुरआन, 29 : 45)

जो लोग यों देखने में तो नमाज़ पढ़ते हैं किन्तु नमाज़ की आत्मा और उसकी अपेक्षाओं से अनभिज्ञ और बेपरवाह हैं उनके सम्बन्ध में क़ुरआन कहता है :

"तबाही है ऐसे नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ों (की अपेक्षाओं) से बेपरवाह हैं। ऐसे लोग मात्र दिखावा करनेवाले हैं और उनका हाल यह है कि (ज़रूरतमंदों को) छोटी-छोटी चीज़ें तक देने से इंकार कर देते हैं।" (क़ुरआन, 107 : 4-7)

ईशभक्त पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) का कथन है :

"जिसकी नमाज़ ने उसे अश्लील और बुरे कर्मों से न रोका, उससे तो वह ईश्वर से और अधिक दूर हो गया।"

इस्लाम को अपेक्षित यह है कि मानव-जीवन नमाज़ के अनुकूल हो। नमाज़ जीवन का सारांश औरं मानव जीवन नमाज़ की व्याख्या सिद्ध हो। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि नमाज़ समझ-बूझकर पढ़ी जाए। नमाज़ पढ़ते समय मनुष्य को यह ध्यान रहे कि वह अपने पालनहार प्रभु के समक्ष खड़ा है और उसी से वह विनती-प्रार्थना कर रहा है तथा यह ध्यान तो अवश्य मन में रहना चाहिए कि ईश्वर उसे देख रहा है और उसकी बातें सुन रहा है। नमाज़ से पूरा लाभ उठाने के लिए यह भी आवश्यक है कि मनुष्य अपना आत्मनिरीक्षण भी करता रहे। नमाज़ में उसने अपने प्रभु को जो भी वचन दिए हैं उनको पूरा करने का भरसक प्रयत्न करे।

नमाज़ पढ़ने के लिए मन की शुद्धता के अतिरिक्त मनुष्य के शरीर और वस्त्र और स्थान का स्वच्छ होना भी अनिवार्य है।

अज़ान और नमाज़ में जो कुछ पढ़ा जाता है मूल सहित उसका हिन्दी अनुवाद अगले पृष्ठों पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

अज़ान

दिन में पाँच बार प्रत्येक नमाज़ से पूर्व अज़ान दी जाती है। कुछ लोग अपनी अनभिज्ञता के कारण यह समझते हैं कि अज़ान में चीख-चीखकर ईश्वर को पुकारा जाता है। यह विचार सर्वथा ग़लत और अज्ञानता पर आधारित है। परिभाषा में अज़ान का अर्थ है लोगों को नमाज़ के लिए बुलाना। एक व्यक्ति, जिसे 'मुअज़्ज़िन' (अज़ान देनेवाला) कहा जाता है, बलन्द आवाज़ से ईश्वर का वास्ता देकर लोगों को पुकारता है।

अज़ान के बोल :

अज़ान देनेवाला अज़ान में निम्न बोल बोलता है :

अल्लाहु अकबर। अल्लाहु अकबर।

"ईश्वर ही महान है। ईश्वर ही महान है।"

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह, अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह

"मैं साक्षी हूँ कि ईश्वर के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं है। मैं साक्षी हूँ कि ईश्वर के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं है।"

अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह। अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह।

"मैं साक्षी हूँ कि मुहम्मद ईश्वर के सन्देष्टा हैं।"

"मैं साक्षी हूँ कि मुहम्मद ईश्वर के सन्देष्टा हैं।"

हय-य अलस्सलाह। हय-य अलस्सलाह।

"आओ नमाज़ की ओर। आओ नमाज़ की ओर।"

हय-य अलल फ़लाह। हय-य अलल फ़लाह।

"आओ सफलता एवं कल्याण की ओर। आओ सफलता एवं कल्याण की ओर।"

अल्लाहु अकबर। अल्लाहु अकबर।

"ईश्वर ही महान है। ईश्वर ही महान है।"

ला इला-ह इल्लल्लाह

"ईश्वर के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं है।"

नोट : सूर्योदय से पूर्व की नमाज़ के लिए जो अज़ान दी जाती है उसमें ये बोल शामिल किए जाते हैं :

अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम, अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम

"नमाज़ नींद से उत्तम है। नमाज़ नींद से उत्तम है।"

यह है अज़ान और उसके मंगलकारी बोल। इसके द्वारा उन समस्त लोगों को नमाज़ के लिए पुकारा जाता है जो एक ईश्वर में आस्था रखते हैं और मुहम्मद (सल्ल०) को ईश्वर का पैग़म्बर और सन्देष्टा मानते हैं।

नमाज़ में क्या पढ़ते हैं?

नमाज़ के लिए खड़े होने के बाद सबसे पहले दिल में यह इरादा किया जाता है कि हम दुनिया से कटकर ईश्वर के सामने नमाज़ के लिए खड़े हैं। फिर नमाज़ शुरू की जाती है। नमाज़ में जो कुछ पढ़ा जाता है, उसके अरबी बोल और उनका अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है :

खड़े होकर पढ़ते हैं :

अल्लाहु अकबर

"ईश्वर ही महान है।"

सुब्हा-न कल्ला हुम-म वबि हमदि-क व तबा-र कस्मु-क व तआला जद्दु-क वला इला-ह ग़ैरु-क।

"ऐ परमेश्वर, तू महिमावान है। प्रशंसा तेरे ही लिए है। तेरा नाम शुभ और मंगलकारी है। तेरी शान सर्वोच्च है। तेरे सिवा कोई पूज्य- प्रभु नहीं है।"

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम

"मैं धुतकारे हुए शैतान से बचने के लिए ईश्वर की शरण में आता हूँ।"

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"शुरू कृपाशील दयावान ईश्वर के नाम से।"

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन, अर्रहमानिर्रहीम, मालिकि यौमिद्दीन। इय्या-क-नअबुदु व इय्या-क-नस्तईन। इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम सिरातल्लज़ी-न अन अम-त अलैहिम, ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन।

"स्तुति एवं प्रशंसा ईश्वर ही के लिए है, जो सारे जहानों का रब (स्वामी, पालनहार एवं शासक) है। अत्यन्त कृपाशील बड़ा ही दयावान है। फ़ैसले के दिन (प्रलय दिवस) का स्वामी वही है। (हे प्रभु !) हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझी से सहायता चाहते हैं। हमें संमार्ग दिखा। उन लोगों का मार्ग जिनपर तेरी अनुकम्पा रही, जिनपर तेरा प्रकोप नहीं हुआ और जो पथभ्रष्ट नहीं हुए।"

आमीन

"ऐ प्रभु ऐसा ही हो ! हमारी प्रार्थना सुन ले।"

इसके बाद क़ुरआन का कुछ भाग पढ़ते हैं। यहाँ क़ुरआन के कुछेक अंश प्रस्तुत हैं :

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वल अस्र, इन्नल इन्सा-न लफ़ी ख़ुस्र-इल्लल लज़ी-न आ-मनू व अमिलुस्सालिहात व तवासौ बिलहक़्क़ि व तवासौ बिस्सब्र।

"ईश्वर के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील बड़ा ही दयावान है।"

"ज़माना साक्षी है कि मनुष्य वास्तव में बड़े घाटे में है। सिवाय उन लोगों के जो आस्थावान हैं और भले और अच्छे कर्म करते हैं। एक दूसरे को सत्य का उपदेश देते हैं और धैर्य का उपदेश देते हैं।"

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

क़ुल हुवल्लाहु अहद। अल्लाहुस्समद। लम यलिद व-लम यूलद। व-लम यकुल्लहु कुफ़ुवन अहद।

"ईश्वर के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील बड़ा ही दयावान है।"

"कहो, वह परमेश्वर है अकेला। (उस जैसा कोई अन्य नहीं) परमेश्वर किसी का मोहताज नहीं। (और सब उसके मोहताज हैं।) उसके कोई संतान नहीं और न वह किसी की संतान है। उसके समकक्ष कोई नहीं।"

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

क़ुल अऊज़ु बि रब्बिल फ़लक़, मिन शर्रि मा ख़लक़ व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब, वमिन शर्रिन्नफ़्फ़ा-साति फ़िल उक़द, वमिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद।

"ईश्वर के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील बड़ा ही दयावान है।"

"कहो, मैं शरण लेता हूँ सुबह के रब की, हर उस वस्तु की बुराई से बचने के लिए, जो उसने पैदा की। और रात के अंधकार की बुराई से बचने के लिए, जबकि वह छा जाए, और गांठों में फूकनेवालों (फूकने वालियों) की बुराई से और ईर्ष्या करनेवाले की बुराई से बचने के लिए, जब वह ईष्या करे।"

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

क़ुल अऊज़ु बि रब्बिन्नास, मलिकिन्नास, इलाहिन्नास मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नास, अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास, मिनल जिन्नति वन्नास।

"ईश्वर के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील बड़ा ही दयावान है।"

"कहो, मैं शरण लेता हूँ मनुष्यों के प्रभु की, मनुष्यों के सम्राट की, मनुष्यों के उपास्य की, उस वसवसे (भ्रष्ट विचार) डालनेवाले की बुराई से बचने के लिए जो बारम्बार पलटकर आता है, जो मनुष्यों के मन में वसवसे (भ्रष्ट विचार) डालता है। चाहे वह जिन्न हो या मनुष्य।"

यह पढ़ने के बाद "ईश्वर ही महान है।" कहते हुए ईश्वर के समक्ष घुटनों पर हाथ रखकर झुक जाते हैं और निम्न शब्दों में प्रभु का गुणगान करते हैं :

सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम। सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम। सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम।

"मेरा महान प्रभु बड़ा महिमावान है। मेरा महान प्रभु बड़ा महिमावान है। मेरा महान प्रभु बड़ा महिमावान है।"

फिर खड़े होते हुए यह पढ़ते हैं :

समिअल्लाहु लिमन हमिदह।

"ईश्वर ने उसकी सुन ली जिसने उसका गुणगान एवं स्तुति की।"

फिर खड़े-खड़े प्रभु का इन शब्दों में गुणगान एवं स्तुति करते हैं :

रब्बना लकल हम्द।

"हे हमारे प्रभु ! तेरे ही लिए प्रशंसा है।"

अब "ईश्वर ही महान है।" कहते हुए अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को प्रभु के समक्ष डाल देते हैं और अपना माथा धरती पर टेककर ईश्वर का गुणगान इन शब्दों में करते हैं :

सुब्हा-न रब्बियल आला। सुब्हा-न रब्बियल आला। सुब्हा-न रब्बियल आला।

"मेरा सर्वोच्च प्रभु बड़ा महिमावान है। मेरा सर्वोच्च प्रभु बड़ा महिमावान है। मेरा सर्वोच्च प्रभु बड़ा महिमावान है।"

इसके बाद "ईश्वर ही महान है।" कहते हुए धरती से माथा उठाते हैं और बैठकर प्रभु से प्रार्थना करते हैं :

अल्लाहुम्मग़फ़िरली वर हमनी वहदिनी व आफ़िनी वर्ज़ुक़्नी।

"हे परमेश्वर, मुझे क्षमा कर और मोक्ष प्रदान कर, मुझपर दया

कर, मुझे संमार्ग पर रख, मुझे शान्ति और सुरक्षा दे और मुझे जीविका प्रदान कर।"

अपने पालनहार प्रभु, वास्तविक शासक और स्वामी से यह विनती और प्रार्थना करने के पश्चात "ईश्वर ही महान है।" कहते हुए उस वास्तविक सम्राट के आगे फिर माथा टेक देते हैं और उसका गुणगान करते हैं :

सुब्हा-न रब्बियल आला। सुब्हा-न रब्बियल आला। सुब्हा-न रब्बियल आला।

"मेरा सर्वोच्च प्रभु बड़ा महिमावान है। मेरा सर्वोच्च प्रभु बड़ा महिमावान है। मेरा सर्वोच्च प्रभु बड़ा महिमावान है।"

इसके पश्चात "ईश्वर ही महान है।" कहते हुए बैठ जाते हैं और फिर यह पढ़ते हैं :

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स-ल-वातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलै-क अय्युहन नबीयु व रहमतुल्लाहि व ब-रकातुह-अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन, अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।

"समस्त मौखिक उपासनाएँ, समस्त शारीरिक उपासनाएँ और समस्त आर्थिक उपासनाएँ ईश्वर के लिए हैं।

हे सन्देष्टा, आपपर सुख-शान्ति हो और ईश्वर की कृपा और उसकी अनुकम्पा हो। सुख-शान्ति हो हमपर और ईश्वर के समस्त सदाचारी भक्तों पर। मैं साक्षी हूँ कि ईश्वर के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं है और मैं साक्षी हूँ कि मुहम्मद उसके दास (भक्त) और सन्देष्टा हैं।"

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन

कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद।

"हे परमेश्वर, दया और अनुकम्पा कर मुहम्मद पर और उनकी संतति और अनुयाइयों पर, जिस प्रकार तूने दया और अनुकम्पा की इबराहीम पर और इबराहीम की संतति और अनुयाइयों पर। निस्सन्देह तू सर्वथा प्रशंसनीय और महान है।"

अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद।

"हे परमेश्वर, बरकत कर मुहम्मद पर और उनकी सन्तति और अनुयायियों पर, जिस प्रकार तूने बरकत की इबराहीम पर और इबराहीम की संतति और अनुयायियों पर। निस्सन्देह तू सर्वथा प्रशंसनीय और महान है।"

इसके बाद कुरआन और हदीस में उल्लिखित दुआओं में से कोई दुआ माँगते हैं। जैसे :

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तवं व फ़िल आख़िरति ह-स-न-तवं व क़िना अज़ाबन्नार।

"हे हमारे प्रभु, हमें दुनिया में भी भलाई दे और परलोक में भी भलाई दे, और हमें नरक की यातना से बचा।"

इसके तत्पश्चात दाईं और बाईं ओर मुँह करके कहते हैं :

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह।

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह।

"सुख-शान्ति हो तुमपर और ईश्वर की कृपा।"

"सुख-शान्ति हो तुमपर और ईश्वर की कृपा।"

इस प्रकार नमाज़ पूर्ण हो जाती है।

सूर्यास्त के लगभग डेढ़ घंटे बाद दिनभर की अन्तिम नमाज़ (इशा की नमाज़) में सोने से पूर्व अपने स्रष्टा, पालनहार अन्तर्यामी परमेश्वर के सामने गिड़गिड़ाकर यह प्रतिज्ञा भी करते हैं :

अल्लाहुम-म इन्ना नस्तईनु-क, व नस्तग़फ़िरुक, व नुअ्मिनु बि-क व न-त-वक्कलु अलै-क, व नुस्नी अलैकल ख़ैर, व नशकुरु-क, वला नक़्फ़ुरु-क, नख़्लउ व नतरुकु मैय्यफ़ जुरु-क, अल्लाहुम-म इय्या-क नअ्बुदु, व ल-क-नुसल्ली व नस्जुदु, व इलै-क नसआ व नहफ़िदु, व नरजू रह-म-त-क, व नख़्शा अज़ाब-क, इन-न अज़ाब-क बिल कुफ़्फ़ारि मुलहिक़।

"हे परमेश्वर, हम तुझी से सहायता चाहते हैं। तुझी से क्षमा और मोक्ष माँगते हैं। तुझमें आस्था रखते हैं। तुझपर ही भरोसा करते हैं। भलाई के साथ तेरा ही गुणगान करते हैं। तेरा आभार प्रकट करते हैं। तेरी अवज्ञा नहीं करते और जो तेरी अवज्ञा करता है उसका संग हम छोड़ देते हैं और उससे अलग हो जाते हैं। हे परमेश्वर, हम तेरी ही उपासना करते हैं। तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते हैं। तेरे समक्ष ही माथा टेकते हैं। हम तेरी ही ओर लपकते हैं और तेरी ही आज्ञा पूरी करते हैं। हम तेरी अनुकम्पा की आशा रखते हैं। हम तेरी यातना से डरते हैं। निस्सन्देह तेरी यातना उन लोगों को मिलकर रहेगी जो तेरी बात नहीं मानते हैं।"